RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.008

भूगोल शिक्षण की नवाचारी प्रवृत्तियाँ – समस्याएँ एवं संभावनाएँ : भागलपुर अनुमंडल के +2 विद्यालयों के संदर्भ में विश्लेषण

डॉ0 संजीव कुमार

उच्चतर माध्यमिक शिक्षक इंटर स्कूल नूरपुर, नाथनगर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 September 2020

Keywords
नवाचारी, प्रवृत्तियाँ, बोधगम्य, व्यापक, गूढ़

ABSTRACT

भूगोल सामाजिक विज्ञान का एक सशक्त विषय है। इसका विषय–क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान के मध्य सेतु का कार्य करता है। इसमें पृथ्वी के भौतिक एवं मानवीय तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। भूगोल शिक्षण में कार्य–कारण सम्बन्धों का विश्लेषण और पृथ्वी सतह पर घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी मिलती है। अतः प्रभावी, बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण शिक्षण के लिए नवाचारों का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। इसकी आधुनिक प्रवृत्ति परंपरागत से भिन्न ळें

भौगोलिक दृष्टि से बिहार के पूर्वी भाग में स्थित अंगप्रदेश में भागलपुर एक कृषि प्रधान जिला है जिसको गंगा नदी दो भागों में विभक्त करती है। इस जिले में तीन अनुमंडल तथा 16 प्रखंड सह अंचल हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार भागलपुर अनुमंडल की कुल जनसंख्या 1448638 है तथा साक्षरता 67.85% है। प्रतीक अध्ययन क्षेत्र भागलपुर अनुमंडल में कुल +2 विद्यालयों की संख्या 35 है। विद्यालय कई कोटि के हैं, जैसे राजकीय, राजकीयकृत, परियोजना, कल्याण विभाग द्वारा संचालित, अल्पसंख्यक आदि। +2 स्तर पर भूगोल कला संकाय के अंतर्गत एक ऐच्छिक विषय है। +2 विद्यालयों के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं यथा–सुयोग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, प्रयोगशाला, पुस्तकालय आजायबघर, शिक्षण सामग्री का अभाव आदि। इन समस्याओं के समाधान के पश्चात् ही उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संभव है। नवाचारी प्रवृत्तियों के अनुप्रयोग की नितांत आवश्यकता है तभी भूगोल जैसे गूढ़ विषय की शिक्षण की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकती है।

भूमिका

शिक्षण एक कला ही नहीं, कौशल भी है।[1] परिवर्त्तनशील संदर्भ में भूगोल की विषयवस्तु, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, शिक्षक प्रशिक्षण तथा शिक्षण उपादान एवं अन्य आयामों में अपेक्षित परिवर्त्तन हुए हैं। भूगोल भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान के मध्य सेतु का कार्य करता है।[2] भूगोल वस्तुतः एक समाकलित एवं अन्तरानुशासनिक विषय है।[3] इसका विषय क्षेत्र व्यापक है। वर्त्तमान में यह पर्यावरण विज्ञान के रूप में उभर रहा है। भूगोल शिक्षण में कार्यकारण सम्बन्धों का विश्लेषण होता है।[4] इसकी आधुनिक प्रवृत्ति परंपरागत से भिन्न है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की कुशलता, दक्षता–उपादान आदि का अत्यधिक महत्व है।[5] प्रभावी, बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण शिक्षण के लिए नवाचारों का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध–अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बिहार राज्य स्थित भागलपुर अनुमंडल के +2 विद्यालयों में भूगोल शिक्षण में नवाचारों के अनुप्रयोग की समस्याओं की पहचान कर उनके समाधान हेतु सार्थक व प्रभावी उपाय तथा संभावनाओं को प्रस्तुत करना है।

भूगोल सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण विषय है। इसका अध्ययन +2 स्तर पर ऐच्छिक विषय के रूप में होता है। भागलपुर अनुमंडलीय क्षेत्र में स्थित +2 विद्यालयों की अवस्थिति, आधारभूत संरचना, शैक्षिक परिवेश, छात्र–शिक्षक अनुपात एवं संख्या, शिक्षण–उपादान, पुस्तकालय, वाचनालय, अजायबघर, प्रयोगशाला, उपस्कर, तथा शिक्षकों की योग्यता, कुशलता, अध्यापन विधियों, शैक्षिक गतिविधियों की स्थिति का मूल्यांकन करना है। सफल एवं प्रभावी शिक्षण की चुनौतियों, मार्ग की बाधाओं के कारकों को चिन्हित कर उनके निदान हेतु ठोस प्रस्ताव भी सुझाना है। शोध–अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

- भागलपुर अनुमंडलीय क्षेत्र में स्थित +2 विद्यालयों को चिन्हित कर उनकी शैक्षिक स्थिति, आधारभूत संरचना का आकलन करना।
- भागलपुर अनुमंडलीय क्षेत्र में अवस्थित +2 विद्यालयों में छात्रों की संख्या तथा छात्र–शिक्षक अनुपात का परीक्षण करना।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

- विद्यालय में शिक्षण से सम्बन्धित उपादानों, उपस्करों, यंत्रों एवं अन्य शिक्षण सामग्रियों का आकलन करना।
- भूगोल में अद्यतन पाठ्यक्रमों के अनुप्रयोग का मूल्यांकन करना।
- छात्रों की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना।
- प्रयोगशाला की स्थिति एवं प्रयोग की समस्याओं पर विचार करना।
- भूगोल के पाठ्यक्रम को सुरूचिपूर्ण तथा ग्राह्य बनाने पर विचार करना।
- भूगोल शिक्षण में नवाचारों के अनुप्रयोग में आनेवाली बाधाओं की पहचान करना।

अध्ययन क्षेत्र

भागलपुर बिहार राज्य का एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर एवं चार प्रमुख पुराने प्रमंडलों में से एक है। भागलपुर जिले के तीन अनुमंडलों में भागलपुर अनुमंडल प्रमुख है। भागलपुर नगर भी इसी अनुमंडल में स्थित है। भागलपुर नगर का प्राचीन इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। यह गंगा नदी तट पर बसा प्राचीन ऐतिहासिक एवं सामरिक महत्व का नगर रहा है। रेशमी नगर नाम से विख्यात भागलपुर प्राचीन अंगमहाजनपद की हृदयस्थली रहा है। महाभारत काल में इस क्षेत्र को अंग देश के नाम से जाना जाता था जो पराक्रमी दानवीर कर्ण के राज्य की राजधानी भी रही।

भागलपुर अनुमंडल का क्षेत्रफल 852 वर्गकिलोमीटर है तथा 2001 की जनगणना के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या 1448638 है। औसत लिंगानुपात 884 है। भागलपुर अनुमंडल की साक्षरता 67.87% है।

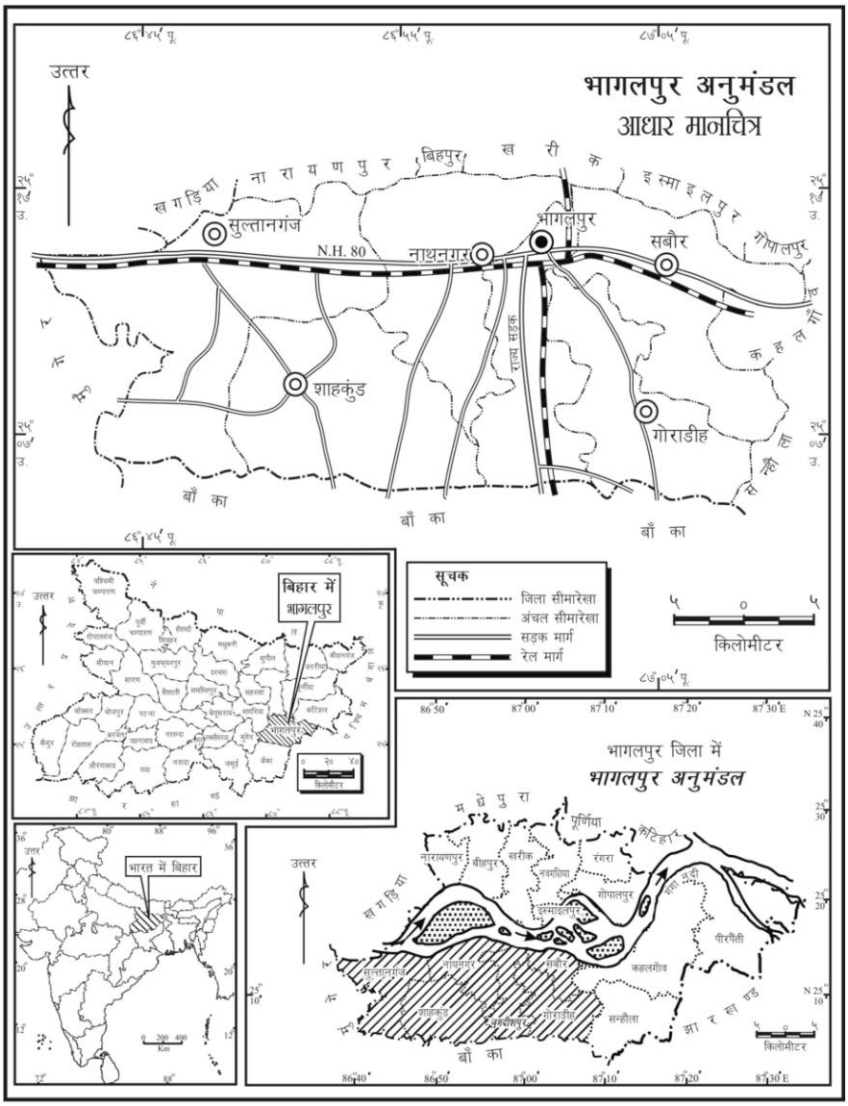

चित्र सं0 : 1.1

प्रतीक अध्ययन क्षेत्र भागलपुर अनुमंडल में पैंतीस +2 विद्यालय है जिसमें 18 नगरीय क्षेत्र में तथा 17 ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। ये विद्यालय राजकीय, राजकीयकृत, अल्पसंख्यक, परियोजना तथा कल्याण विभाग द्वारा संचालित आवासीय विद्यालय आदि श्रेणी के है।

सारणी – 1.1

भागलपुर अनुमंडल : +2 विद्यालयों की संख्या, 2019–20

क्र0 सं0	अंचल का नाम	+2 विद्यालयों की संख्या		
		कुल	ग्रामीण	नगरीय
1.	जगदीशपुर	17	03	14
2.	सबौर	03	03	00
3.	गोराडीह	01	01	00
4.	नाथनगर	05	02	03
5.	सुल्तानगंज	04	03	01
6.	शाहकुंड	05	05	00
	कुल	**35**	**17**	**18**

स्रोत : शोधकर्त्ता द्वारा परिकलित

सारणी – 1.2

भागलपुर अनुमंडल : +2 विद्यालयों में भूगोल शिक्षण स्थिति, 2019–20

क्र0 सं0	अंचल का नाम	+2 विद्यालयों की संख्या	+2 शिक्षकों की संख्या	भूगोल शिक्षक की संख्या	+2 में नामांकित छात्रों की संख्या	कला संकाय में नामांकित छात्रों की संख्या	भूगोल विषय चयन करने बाले छात्रों की संख्या
1.	जगदीशपुर	17	123	04	7004	4248	880
2.	सबौर	03	29	00	1413	927	37
3.	गोराडीह	01	07	00	536	336	85
4.	नाथनगर	05	38	01	2146	1617	344
5.	सुल्तानगंज	04	32	02	1844	1101	466
6.	शाहकुंड	05	33	02	1590	1202	322
	कुल	**35**	**262**	**09**	**14533**	**9431**	**2134**

स्रोत : शोधकर्त्ता द्वारा परिकलित

सारणी–1.3

भागलपुर अनुमंडल : चयनित +2 विद्यालयों में भूगोल शिक्षण स्थिति, 2019–20

क्र0 सं0	विद्यालय का नाम	+2 शिक्षकों की संख्या	भूगोल शिक्षकों की संख्या	कुल छात्र संख्या	कला संकाय के छात्र की संख्या	भूगोल छात्रों की संख्या
1	राजकीय इंटरमीडिएट जिला स्कूल भागलपुर	10	–	824	475	85
2	मोक्षदा बालिका इंटर विद्यालय भागलपुर	12	–	360	300	–
3	मुस्लिम इंटर स्कूल भागलपुर	–	–	259	160	45
4	राजकीय आवासीय पिछड़ा वर्ग बालिका वि0 भागलपुर	05	–	107	40	–
5	कृष्णानंद सूर्यमल इंटर विद्यालय सुल्तानगंज भागलपुर	14	–	505	250	14
6	प्रोजेक्ट गर्ल्स स्कूल जगदीशपुर	08	–	498	390	–
7	+2 उच्च विद्यायल सबौर	14	–	498	286	–
8	गाँधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जमीन मुरहनहाट	07	–	536	336	85
9	इंटर स्कूल नूरपुर नाथनगर	14	01	267	230	113
10	इंटरस्तरीय विद्यालय खैरैहिया, सुल्तानगंज	08	01	724	500	305
11	इंटरस्तरीय विद्यालय शाहकुंड	08	01	231	202	41
	कुल	**100**	**03**	**4809**	**3169**	**668**

स्रोत : शोधकर्त्ता द्वारा परिकलित

RRIJM 2015, All Rights Reserved

परिकल्पना

प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं–

- भागलपुर अनुमंडल की भौगोलिक अवस्थिति, सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक स्वरूप एवं संरचना का प्रभाव शिक्षण की पद्धति, प्रणाली एवं स्वरूप पर परिलक्षित होता है।
- भौतिक एवं आर्थिक विकास का सीधा सम्बन्ध शैक्षिक विकास एवं स्तर से है।
- साक्षरता एवं शिक्षा का सामाजिक–संरचना एवं स्थानिक प्रतिरूप के साथ घनिष्ट संबंध है।
- शिक्षा की आधारशिला बनानेवाले प्राथमिक, मध्य एवं उच्च विद्यालयों का उच्चतर विद्यालयों के स्तरोन्नयन एवं विकास में अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- भूगोल विषय के सुगठित पाठ्यक्रम, उपयुक्त शिक्षण सामग्री, कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति तथा अन्य सुविधाओं की कमी से शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- भूगोल शिक्षण की नई प्रवृत्तियों से बच्चों को अवगत कराना तथा पाठ्यक्रम को अद्यतन एवं आधुनिक बनाना, शिक्षकों का उन्मुखीकरण इस विषय की उन्नत संभावना का परिचायक है।

विधि तंत्र

शोध–अध्ययन में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, निरीक्षण प्रतिदर्श अध्ययन, प्रश्नावली आदि विधियों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों की प्राप्ति हेतु अध्ययन क्षेत्र के समस्त +2 विद्यालयों में प्राथमिक स्रोत के आधार पर आँकड़े प्राप्त किए गए हैं जो काफी मौलिक एवं निष्कर्षमूलक हैं। परिकल्पनाओं का परीक्षण प्रतिदर्श अध्ययन के द्वारा किया गया है। इस प्रकार शोध की विधियों का प्रयोग संमस्याओं को जानने के क्रम में किया गया है।

भूगोल शिक्षण की समस्याएँ

भूगोल शिक्षण की निम्नलिखित समस्याएँ हैः–

- **भूगोल कक्ष की समस्या** :– लगभग सभी विद्यालयों में भूगोल कक्ष की पृथक व्यवस्था नहीं है जिससे शिक्षण–सामग्री का यथोचित प्रयोग नहीं हो पाता है। अतः छात्र पाठ को हृदयंगम करने में कठिनाई महसूस करते हैं।
- **प्रायोगिक कक्ष की समस्या** :– भूगोल को विज्ञान का एक अंग माना गया है जिसके अध्यापन में न केवल सैद्धान्तिक तथ्य है, वरन् प्रायोगिक कार्य भी सम्मिलित है। इसके लिए सुसज्जित प्रयोगशाला अति आवश्यक है। +2 के भूगोल पाठ्यक्रम में 100 में से 30 अंक प्रायोगिक कार्य के लिए निर्धारित हैं। अतः भूगोल के शिक्षण–सामग्री के लिए प्रायोगिक कक्ष आवश्यक है, जिसमें चौरस मेज, टूल, ट्रेसिंग टेबूल, सभी उपकरणों से युक्त आलमीरा तथा अन्य फर्नीचर सुव्यवस्थित हो।
- **भूगोल शिक्षण सामग्री की समस्या** :– भूगोल शिक्षण में शिक्षण सामग्री एवं उपादानों का अत्यधिक महत्व है। शिक्षण सामग्री के अंतगर्त मानचित्र, एटलस, चार्ट, मॉडल, जलवायु एवं मौसम के उपकण, कम्प्यूटर आदि की आवश्यकता होती है। भूगोल शिक्षण को रोचक, सरल तथा बोधगम्य बनाने में शिक्षक को इन दृश्य–श्रव्य साधनों की आवश्यकता पड़ती है। अगर इन साधनों का प्रयोग नहीं किया जाता है, तो छात्र पाठ को आत्मसात करने में कठिनाई महसूस करते हैं।
- **पुस्तकालय एवं अजायबघर की समस्या** :– भूगोल शिक्षण के लिए सुव्यवस्थित पुस्तकालय जिसमें पाठ्यपुस्तक, संदर्भ पुस्तक, पत्र–पत्रिकाएँ, कई प्रकार के एटलस, जनसंख्या प्रतिवेदन, संख्यिकी प्रतिवेदन आदि रहते हैं, की परम् आवश्यकता है।[6] भूगोल शिक्षण को सफल बनाने के लिए जिन उपादानों की आवश्यकता होती है वे सभी अजायवघरों में सुरक्षित रहते हैं। प्राचीनकाल के पत्थर, खनिज, फोटोग्राफ, मानचित्र आदि आजायबघरों में सुरक्षित रहते हैं। ये छात्रों का ज्ञानवर्द्धन करते हैं। बिहार के ग्रामीण व नगरीय +2 विद्यालयों में अलग पुस्तकालय एवं अजायबघर का सर्वथा अभाव है। अगर पुस्तकालय है तो अलग से नहीं और पुस्तकें बिखरी हुई हैं। अच्छी पुस्तकों का संग्रह छात्रों की जिज्ञासा को शांत करता है।
- **शिक्षकों की समस्या** :– भागलपुर अनुमंडलीय क्षेत्र के विद्यालयों में छात्र–शिक्षक अनुपात में शिक्षक पद स्वीकृत नहीं है। प्रति 40 छात्र पर एक योग्य प्रशिक्षित भूगोल शिक्षक का रहना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक है। शिक्षकों को समय–समय पर विषय–वस्तु से परिचय कराने के लिए स्तरोन्नयन कार्यक्रम, रिफ्रेसर कोर्स कराने की आवश्यकता है।
- **शैक्षणिक परिभ्रमण की समस्या** :– +2 स्तर पर सरकार द्वारा शैक्षणिक भ्रमण के लिए राशि की कोई व्यवस्था नहीं है, जिस कारण शैक्षणिक परिभ्रमण नहीं हो पाता है। ज्ञातव्य हो कि भौगोलिक ज्ञान निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण पर आधारित होता हैं।
- **अधिकांश +2 विद्यालयों में भूगोल शिक्षण का अभाव** :– +2 विद्यालयों में ऐसा देखा गया कि कुछ ही

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विद्यालयों में भूगोल शिक्षक नियुक्त हैं, जिस कारण इसका शिक्षण गिने–चुने +2 विद्यालयों में हो पाता हैं। शिक्षक के अभाव में छात्र +2 में भूगोल विषय का चयन नहीं कर पाते हैं जिसके कारण छात्र स्नातक में भूगोल विषय नहीं ले पाते हैं।

- **संकाय की समस्या :–** दूसरे राज्य में भूगोल विज्ञान संकाय का अंग है, जबकि हमारे यहाँ कला संकाय में है, जिस कारण इसकी महत्ता को कमतर आँकी जाती है।
- **कुशल एवं योग्य शिक्षकों के स्थान पर तदर्थ शिक्षकों का नियोजन :–** सरकार की ठोस नीति के अभाव एवं उदासीनता के कारण विद्यालयों में कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति नहीं हो पा रही है। नियुक्ति प्रक्रिया भी त्रुटिपूर्ण है। नियमित शिक्षकों की नियुक्ति न कर तदर्थ रूप में नियोजित शिक्षकों की बहाली की जाती है। उन्हें सम्मानजनक वेतन नहीं दिया जा रहा है। परिणामस्वरूप शिक्षकों की ऊर्जा शैक्षिक गतिविधियों में पूर्ण रूप से नहीं लग रही है।

संभावनाएँ

भूगोल +2 स्तर पर एक महत्वपूर्ण विषय है। +2 स्तर पर इसकी विषय–वस्तु में भौतिक भूगोल, पर्यावरण भूगोल, जैव भूगोल, मानव भूगोल, आर्थिक भूगोल, विश्व सहित भारत का भूगोल का अध्ययन सम्मिलित है। साथ ही प्रयोगिक पाठ्यक्रम में अक्षांश–देशांतर, मापक जलवायु एवं मौसम सम्बन्धी परिघटनाओं का ज्ञान एवं प्रयुक्त होनेवाले यंत्र, क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं परियोजना कार्य आदि सम्मिलित है। निश्चय ही इसका पाठ्यक्रम बहुत रोचक है जिसका ज्ञान प्रत्येक छात्र के लिए आवश्यक है, किन्तु आधारभूत संसाधनों के आभाव, शिक्षकों की उदासीनता, सरकारी तंत्र की नीतिगत एवं प्रशासनिक उदासीनता के कारण भूगोल शिक्षण की स्तरीयता और प्रभावशीलता में वांछित परिणाम देखने को नहीं मिलता है। भूगोल शिक्षण की इस क्षेत्र के +2 विद्यालयों में निम्नलिखित संभावनाएँ हैं :–

- +2 स्तर पर प्रत्येक विद्यालय में भूगोल शिक्षण की व्यवस्था हो जिसके लिए कुशल एवं योग्य प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्त हों।
- पाठ्यक्रम में नवीन प्रवृत्तियों का समावेश हो।
- प्रत्येक विद्यालय में भूगोल के प्रयोगिक उपादानों की आपूर्ति हो।
- भूगोल कक्ष एवं अजायबघर सुसज्जित हो तथा समय–समय पर नवीन प्रायोगिक उपादानों की आपूर्ति के लिए सरकार द्वारा राशि उपलब्ध करायी जाय।
- समय–समय पर शिक्षकों के लिए रिफ्रेशर कोर्स की व्यवस्था हो ताकि उन्हें भूगोल में हो रहे शोध एवं नवोन्मेष की जानकारी प्राप्त हो सके।
- भूगोल शिक्षण में नवाचारी विधियों का प्रयोग किया जाय।
- +2 स्तर पर भोगोलिक भ्रमण की व्यवस्था होनी चाहिये। भौगोलिक ज्ञान निरीक्षण, पयेवेक्षण एवं सर्वेक्षण पर आधारित होता है। अतः शिक्षा विभाग द्वारा पर्याप्त राशि उपलब्ध कराई जानी चाहिये।
- भूगोल शिक्षकों की नियुक्ति छात्र–शिक्षक अनुपात में हो।
- दूसरे राज्यों की तरह हमारे राज्य में भी उसे विज्ञान संकाय का अंग बनाया जाना चाहिये, जिससे इसकी महत्ता बढ़ेगी तथा छात्रों में इस विषय के प्रति जिज्ञासा बढ़ेगी।

निष्कर्ष :–

शिक्षा की द्विमुखी प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी का पारस्परिक संबंध है। संसाधनों के उपयोग, मूल्यांकन, प्रबंधन एवं नियोजन, क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से भूगोल का ज्ञान अपरिहार्य है। ऐसे महत्वपूर्ण विषय का शिक्षण रोचक, सरल एवं प्रभावी ढ़ंग से किया जाना आवश्यक है ताकि समाज एवं राष्ट्रनिर्माण के दायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक संभव हो सके। अगर भागलपुर अनुमंडलीय क्षेत्र के +2 विद्यालयों की प्रमुख समस्याओं का समुचित समाधान हो जाय तो निश्चय ही स्तरीय, गुणवत्तापूर्ण भूगोल शिक्षण की संभावना बनती है।

संदर्भ

1. कुशवाहा, कर्ण सिंह (1966) : भूगोल शिक्षण कला, गोविन्द प्रकाशन, जयदेवनगर, लखीमपुर खीरी
2. सिंह, एच0 एन0 (1975) : भूगोल शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. जैन, मदनलाल (1966) : भूगोल अध्यापन, राम प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा–3
4. मैकिण्डर, एच0 जे0 (1913) : टीचिंग ऑफ ज्योग्राफी, फिलिप एण्ड सन्स, लंदन
5. चौरसिया, एम0 एल0 (1967) : कक्षा शिक्षण में सहायक सामग्री
6. एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 (1975) : दि कैरिकुलम ऑफ दि टेन ईयर स्कूल, न्यू दिल्ली

RRIJM 2015, All Rights Reserved